27

कैरियर विकास

अपने कैरियर को तीव्र गति प्रदान करें, उनके लिये जो अपने कैरियर को नई ऊँचाइयों तक ले जाना चाहते हैं, शामिल होइए....

एनआईआईटी आपको उत्कष्ट कैरियर अवसर प्रदान करता है।

विद्यार्थीगण ध्यान दें : "दि टाइम्स ऑफ इंडिया" शैक्षणिक तथा व्यावसायिक अवसरों पर एक वहत खण्ड प्रस्तुत कर रहा है।

आपने समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पैंफ्लेटों आदि में इस प्रकार के अनेक विज्ञापन देखे होंगे। क्या "कैरियर" शब्द आपके मस्तिष्क में कोई हलचल उत्पन्न करता है? कैरियर या कैरियर निर्माण वास्तव में क्या है? इस पाठ के अध्ययन से आपको कैरियर की अवधारणा समझने में मदद मिलेगी। यह आपके अपने कैरियर को सुव्यवस्थित रूप से विकसित करने में भी सहायक होगा।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात् आपके लिए संभव होगाः

- कैरियर विकास के अर्थ व चरणों का उल्लेख करना;
- कैरियर विकास के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करना;
- उल्लेख करना कि एक व्यक्ति कैसे अपने कैरियर की योजना बनाये;
- निरंतर शिक्षा तथा कार्य के दौरान प्रशिक्षण की अवधारणा का वर्णन करना;
- उन परिस्थितियों का उल्लेख जिनके अंतर्गत कैरियर समायोजन आवश्यक हो जाता है; तथा
- स्वरोजगार की अवधारणा को समझना।

टिप्पणी

27.1 कैरियर विकास का अर्थ

"कैरियर विकास" में शब्द कैरियर से तात्पर्य उन सभी गतिविधियों से है जो एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में करता है। इन गतिविधियों में व्यक्ति की व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा सामाजिक गतिविधियां शामिल हैं। इस प्रकार 'कैरियर' से तात्पर्य एक व्यक्ति की जीवन शैली से है। विकास व्यवहार में होने वाला आशोधन है जो प्रगति व शिक्षण के परिणामस्वरूप होता है। इसमें सामान्यतः प्रगतिशील परिवर्तन शामिल होते हैं। इस प्रकार कैरियर विकास से तात्पर्य एक व्यक्ति की जीवन शैली में होने वाले समग्र विकास से है। इसमें व्यक्ति के अनुभव शामिल हैं जो उसके अनुभवों, शिक्षा, कैरियर चयन, कार्य के दौरान प्रशिक्षण, व्यावसायिक उपलब्धियों के स्तर तथा संतोष के स्तर सहित उसकी पहचानों के निर्माण में सहायक होते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति की जीवन शैली कैसे विकसित होती है। निःसंदेह व्यवसाय एक व्यक्ति की जीवनशैली में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है तथा व्यावसायिक विकास कैरियर विकास का आधार है। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति गैर कार्यपालक संवर्ग से कार्यपालक संवर्ग में पदोन्नति प्राप्त करता है तो उसे अपने संगठन से और अधिक सुविधायें प्राप्त होने लगेंगी जैसे उच्चतर वेतन, बड़ा मकान आदि और उसकी जीवन शैली में स्वतः ही परिवर्तन आ जाएगा। पदोन्नति व्यावसायिक विकास का भाग है किंतु यह व्यक्ति के सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन में भी परिवर्तन लाता है।

क्रिया

श्री रामलाल ने वाणिज्य में स्नातक डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् एक छोटी कंपनी में एक क्लर्क के रूप में अपना कैरियर आरंभ किया। इस नौकरी के दौरान उसने एम. काम. कर लिया तथा आई.सी.डब्ल्यू.ए. की डिग्री प्राप्त करके अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ाया। एक बहुराष्ट्रीय कंपनी से प्राप्त वित्तीय प्रबंधक के प्रस्ताव ने इनकी जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन प्रस्तुत किए। अब वह एक फ्लैट, कार तथा अनेक अन्य सुख–सुविधाओं का स्वामी है। वह अपने दो प्यारे बच्चों के साथ सुखद विवाहित जीवन व्यतीत कर रहा है। ऊँचे तबके के समाज में जाने के कारण वह अपने बच्चों को सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान कर रहा है, जिसकी वह पहले कल्पना भी नहीं कर सकता था और अब वह उसे आसानी से उपलब्ध है। यह कैरियर विकास का पुरस्कार है। कैरियर विकास एक उत्कष्ट, गतिशील तथा सतत् प्रक्रिया है।

क्या इस उदाहरण के आधार पर आप कैरियर विकास की कुछ और विशेषताओं की सूची तैयार कर सकते हैं?

_____

_____

टिप्पणी

27.2 जीवन के चरण तथा व्यावसायिक विकास

जीवन के चरणों तथा व्यावसायिक विकास के चरणों की अवधारणा कैरियर विकास को समझने के लिए व्यापक अन्तर्दष्टि उपलब्ध कराती है। ब्योहलर के विश्लेषण के आधार पर जीवन के पांच चरण होते हैं:

प्रगति, समन्वेशी, स्थापना, रख–रखाव, तथा ह्रास

तालिका 27.1: *जीवन के चरण तथा व्यावसायिक विकास के चरण*

चरण के नाम	आयु सीमा	विशेषताएं
1. अभिवद्धि	0-14 वर्ष	• आधारभूत कौशलों का विकास
2. समन्वेषी	15-25 वर्ष	• स्वयं के बारे में सोचना व समझना • वयस्क बनना • जीवन साथी को खोजना • व्यवसाय को खोजना • समाज में अपना स्थान बनाना
3. स्थापन	25-45 वर्ष	• चुने गए व्यवसाय में स्वयं को स्थापित करना • एक व्यक्ति तथा एक व्यावसायिक के रूप में अपनी पहचान बनाना
4. अनुरक्षण	45-60 वर्ष	• व्यावसायिक तथा सामाजिक स्तर को बनाए रखना व आगे बढ़ाना
5. ह्रास	60 वर्ष के पश्चात्	• सक्रिय सेवा से सेवानिवति किंतु परामर्शदाता के रूप में कार्य करना व प्रवीणता के उच्चतर स्तरों पर अनुभव उपलब्ध कराना

तालिका 27.1 में दर्शाई गई आयु की श्रेणियां अपरिवर्तनीय तथा विशिष्ट नहीं हैं। ये लचीली हैं तथा एक दूसरे में प्रविष्ट कर सकती हैं। अब हम इन प्रत्येक चरण को विस्तार से समझेंगे:

अभिवद्धि चरण: चौदह वर्ष की आयु संकल्पना के अनुसार यह एक प्रारंभिक स्तर है जिसके दौरान बच्चा आधारभूत कौशलों को विकसित करता है।

समन्वेषी चरण: यह 15 से 25 वर्ष की आयु के मध्य का चरण है। इस स्तर के दौरान एक व्यक्ति स्वयं के बारे में वयस्क बनने की अपनी भूमिका, अपना जीवन साथी ढूँढने, अपना व्यवसाय पाने तथा समाज में अपना स्थान बनाने के संबंध में सोचना तथा समझना आरंभ कर देता है।

टिप्पणी

स्थापन चरण: यह चरण 25 से 45 वर्ष के मध्य का है। इस चरण के दौरान व्यक्ति स्वयं को स्थापित करता है तथा अपनी व्यावसायिक पहचान बना लेता है (उदाहरण के लिए, वह एक प्लंबर/डॉक्टर/बैंक अधिकारी है)

अनुरक्षण चरण: इस चरण में 45 से 58 वर्ष की आयु शामिल है। इस स्तर के दौरान व्यक्ति अपने स्थान को बनाए रखता है।

ह्रास: यह 58 वर्ष की आयु के बाद का चरण है। इस चरण में न केवल व्यक्ति की शारीरिक क्षमताओं में कमी आती है बल्कि व्यावसायिक, पारिवारिक जिम्मेदारियों तथा सामुदायिक भूमिका में भी ह्रास होने लगता है।

जीवन के चरणों को समझने के पश्चात् अब हम व्यावसायिक विकास के चरणों पर विचार करेंगे।

27.3 व्यावसायिक विकास के चरण

व्यावसायिक विकास के चरणों की व्याख्या निम्नानुसार की जा सकती है।

पूर्ण समन्वेषण: इसमें पहला व्यवसाय (नौकरी) शामिल है। यह पूर्णकालीन या अंशकालीन हो सकती है।

समन्वेशण व परीक्षण: इस चरण में व्यक्ति और अधिक अवसरों का परीक्षण करता है तथा अंत में अपनी रुचि के व्यवसाय (नौकरी) में स्थापित होने का प्रयास करता है। इस चरण को दलदली चरण भी कहते हैं।

स्थापन तथा अनुरक्षण: इस चरण के दौरान एक व्यक्ति कार्य के एक क्षेत्र में अपने आप को स्थापित करता है तथा उस क्षेत्र में स्वयं को बनाए रखता है।

सेवानिवत्ति: यहां व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों को कम करने लगता है। व्यक्ति स्वयं की क्षमताओं के अनुसार या तो नौकरी छोड़ देता है या कम उत्तरदायित्व वाली नौकरी में चला जाता है। ये कार्य जगत में प्रविष्ट होने के बाद कैरियर विकास के चरण हैं। किन्तु कैरियर विकास अभिरुचि के प्रारंभिक अन्वेषण से प्रारंभ होता है। वास्तव में, कैरियर विकास के चरण व्यूह्लर द्वारा परिभाषित जीवन चरण व व्यावसायिक विकास के चरणों में शामिल हैं।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. प्रारंभिक वयस्कावधि के संगत व्यावसायिक विकास के चरणों की सूची बनाइए।

टिप्पणी

_____

2. सेवानिवति का महत्वपूर्ण पहलू क्या है?

_____

_____

क्रिया

एक प्रसिद्ध शल्यचिकित्सक (सर्जन) डॉ मोहन का उदाहरण लीजिए। अब वे अपने पेंशन का आनंद उठा रहे हैं। आठवीं कक्षा में पढ़ाई करते समय उन्होंने डॉक्टरों के ऊपर लिखे एक पाठ को पढ़ा था जिसने उन्हें बहुत मोहित किया था और वे चिकित्सा व्यवसाय की ओर आकर्षित हो गए थे। इसके लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की, जीव विज्ञान में अच्छे अंक प्राप्त किए, प्री–मेडिकल परीक्षा पास की तथा तत्पश्चात् वे एक डॉक्टर बन गए। 25 वर्ष की आयु में उन्होंने एक बड़े सरकारी अस्पताल में सहायक सर्जन के रूप में कार्यभार ग्रहण किया तथा 45 वर्ष की आयु तक आते–आते वे एक महान सर्जन बन गए। वे 60 वर्ष की आयु में सेवानिवत हुए। अब 65 वर्ष की आयु में हालांकि वे सक्रि सर्जिकल प्रैक्टिस में नहीं हैं किंतु वे मानवता की सेवा में मूल्यवान योगदान देना चाहते हैं।

क्रियाः डॉ. मोहन के जीवन के चरणों तथा व्यावसायिक विकास के चरणों का वर्णन कीजिए।

स्वयं करने का प्रयास करें:

65-70 वर्ष की आयु के एक व्यक्ति से बात करें तथा उसके कैरियर विकास के स्तरों को लिखें।

श्री नवीन एक इंजीनियर है क्योंकि उसके माता–पिता चाहते थे कि वह एक इंजीनियर बने। वह एक छोटे कारखाने में कार्य करता हैं। उसे अपना काम पसंद नहीं है तथा उसकी आय भी पर्याप्त नहीं है। वह अपने कार्य तथा जीवन से हतोत्साहित है। दूसरी ओर, श्री गणेश एक टैक्सी ड्राइवर है। वह अपने कार्य से खुश है तथा अच्छा कमा लेता है। वह अपने कार्य के प्रति उत्साहित है तथा उसे बहुत पसंद करता है।

27.4 कैरियर नियोजन

आधुनिक युग योजना का युग है। यहां तक कि छोटे–छोटे कार्यों जैसे फिल्म जोन या पिकनिक पर जाने के लिए हमें योजना बनानी पड़ती है। जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं कैरियर एक व्यक्ति की समग्र जीवन शैली है। कैरियर योजना में व्यक्तिगत जीवन

टिप्पणी

की योजना बनाना, सामाजिक जीवन की योजना बनाना तथा व्यावसायिक जीवन की योजना बनाना शामिल है। कैरियर नियोजन के ये तीन पहलू अंतर–संबंधित हैं तथा एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अब हम इन अवधारणाओं को एक–एक करके समझेंगे।

क) **व्यक्तिगत जीवन की योजना बनाना:** इसमें इन बातों की योजना शामिल है कि कब विवाह करना है, किस प्रकार के व्यक्ति के साथ आप विवाह करना चाहते हैं, बच्चे कब चाहिए, आप अपने जीवन–साथी व बच्चों को किस प्रकार का जीवन उपलब्ध कराना चाहते हैं और बहुत सी अन्य बातें जो विशेष रूप से आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। एक व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन पर उसका व्यावसायिक तथा सामाजिक जीवन प्रभाव डालता है।

ख) **सामाजिक जीवन की योजना बनाना:** इसमें उन दो बातों की योजना शामिल है कि आपको कैसी जीवन शैली चाहिए, आप कैसे समाज में रहना चाहते हैं तथा आप किस प्रकार की संपत्तियां खरीदना चाहते हैं आदि। एक व्यक्ति का सामाजिक जीवन उसके व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जीवन से प्रभावित होता है।

ग) **व्यावसायिक जीवन की योजना बनाना:** हमारे समाज में उपलब्ध अनेक व्यवसायों में से एक का चयन करना या निरंतर चयन करने के लिए योजना बनाने की प्रक्रिया जीवन पर्यंत प्रक्रिया है। एक व्यक्ति का व्यावसायिक जीवन आत्म को उसके कार्य के संसार से जोड़ता है। सवयं को तथा कार्य के संसार को समझने के पश्चात आपको अपने गुणों का मिलान आपके संज्ञान के प्रत्येक व्यवसाय के लिए अपेक्षित गुणों से करना होगा। अंततः उस व्यवसाय का चयन कीजिये जिससे आपके सर्वाधिक गुणों का मिलान हो जाय। इसका एक व्यक्ति के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। संक्षेप में कैरियर नियोजन को आप निम्नलिखित आरेख की सहायता से समझ सकते हैं।

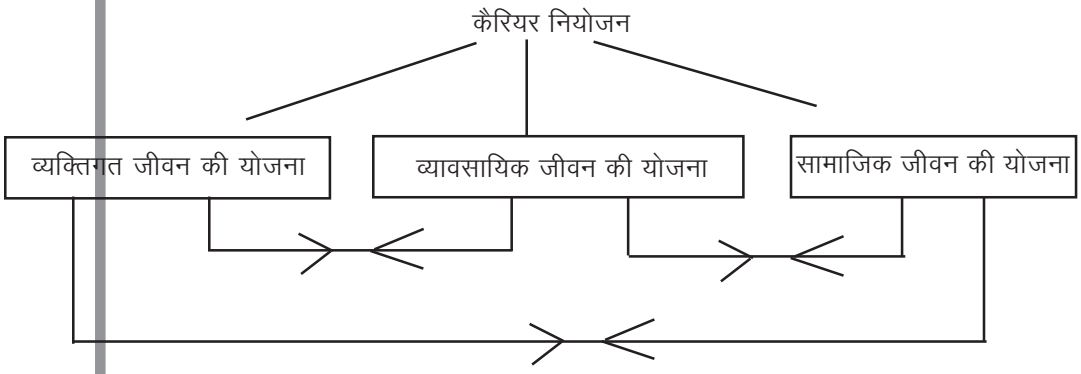

चित्र 27.1: *कैरियर नियोजन*

एक उचित व्यावसायिक नियोजन में तीन मुख्य विशेशताएं हैं यथा स्वयं को जानें, कार्य के वातावरण को जानें तथा स्वयं को कार्य जगत के साथ मिलान करें।

(1) **स्वयं को जानें (स्व-मूल्यांकन):** अपने स्वयं के संबंध में, अपनी अभिरुचि, क्षमताओं, रुचियों, संसाधनों तथा सीमितताओं का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए।

टिप्पणी

(2) **कार्य के वातावरण को जानें (व्यवसायों का मूल्यांकन):** विभिन्न व्यवसायों, प्रत्येक व्यवसाय के लिए योग्यताओं व प्रवेश आवश्यकताओं, आय, सफलता की शर्तों, लाभों पदोन्नति की संभावनाओं, तथा क्षतिपूर्ति आदि का ज्ञान। आगें बढ़ने से पहले हम श्री गणेश एक सुखी टैक्सी तथा श्री नवीन जो एक हतोत्साहित इंजीनियर हैं, का उदाहरण देखेंगे। श्री गणेश सुखी हैं क्योंकि उसने टैक्सी ड्राइवर बनने का विकल्प इस लिये चुना क्योंकि ड्राइविंग करना तथा लोगों से बातचीत करना उसे अच्छा लगता है। श्री नवीन एक हतोत्साहित व्यक्ति है क्योंकि उसके माता पिता ने अपनी उम्मीदों को पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाने के लिए दबाव डाला।

अब हम एक–एक करके इन मुख्य बिंदुओं पर चर्चा करेंगे ताकि इन्हें बेहतर ढंग से समझ सकें।

27.5 स्वयं को जानें (स्व-मूल्यांकन)

"स्वयं को समझना" कैरियर विकास में सफलता प्राप्त करने के लिए मुख्य शब्द है। यह सुनने में अति साधारण प्रतीत होता है किंतु वास्तविक व्यवहार में यह एक अत्यंत कठिन लक्ष्य है। कुछ लोग जीवन में हतोत्साहित हो जाते हैं क्योंकि वे कैरियर विकास के प्रारंभिक चरणों में स्वयं को समझ नहीं पाते हैं। लोग निम्नलिखित कारणों की वजह से स्वयं को समझ नहीं पाते हैं।

अपने स्वयं के स्वरूप में बने रहने के साहस का अभाव: हम सामान्य रूप से किसी और की तरह बनना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, युवा लड़के व लड़कियां फिल्मी हीरो व हीरोइनों के हेयरस्टाइल की नकल करना चाहते हैं। या हम दूसरों की अपेक्षा के अनुसार होना चाहते हैं। श्री नवीन के मामले में नवीन एक अभिनेता बनना चाहता था किन्तु उसके पिता उसे इंजीनियर बनाना चाहते थे। इसलिए वह इंजीनियर बन गया बिना यह सोचे कि वह स्वयं क्या बनना चाहता है।

हम अपने आप को समझने के लिए समय नहीं लेते हैं। यदि हमारे पास समय होता है तो हम स्वयं को समझने के स्थान पर किसी अन्य कार्य को करने को वरीयता देते हैं। हम अपने अनुभवों का गलत अर्थ लगाते हैं। उदाहरण के लिए विज्ञान में कम अंक प्राप्त करने की वजह से हम समझने लगते हैं कि वह इस विषय में कमजोर है, हालांकि कम अंक आने के अन्य कारण भी हो सकते हैं।

कई बार हमें अपनी इच्छाओं का ज्ञान नहीं होता है तथा हम मगतष्णा के पीछे भागने लगते हैं। जब पूछा जाता है कि आपको क्या चाहिए तो अधिकतर लोग कहते हैं कि उन्हें चाहिए पैसा या कोई भी वस्तु जो पैसे से खरीदी जा सकती है। यदि अत्यधिक पैसा उपलब्ध करा दिया जाए तो व्यक्ति किसी और वस्तु की ओर अग्रसर हो जाता है। अधिकतर लोग एक तत्काल इच्छा से दूसरी इच्छा की ओर चले जाते हैं, वस्तुतः बिना यह जाने कि वास्तव में उन्हें क्या चाहिए जो कि अधिक मूल तथ्य है। सर्वाधिक

टिप्पणी

आधारभूत व चिरकालीन आकांक्षा अपनी रुचि का अनुसरण करना है। इसलिए व्यक्ति को सर्वप्रथम यह समझने का प्रयास करना चाहिए कि:

- स्वयं विद्यमान है।
- हम में से प्रत्येक एक सत्ता है।
- कोई भी दो व्यक्ति पूर्णतः एकसमान नहीं हो सकते।

प्रत्येक व्यक्ति में आधारभूत क्षमताएं होती हैं जिनके कारण वह व्यवसायों की व्यापक श्रंखला में से एक का चयन करता है। किंतु व्यवसायों का चयन विशुद्ध रूप से व्यक्तिगत रुचि का विषय है। अपनी रुचि, क्षमताओं तथा सकारात्मक बिंदु के संबंध में अंतिम निर्णय लेने से पूर्व व्यक्ति को गहन रूप से स्व–विश्लेषण या अंतर्निरीक्षण करना चाहिए।

कार्य के वातावरण को समझें (चयनित व्यावसाय का मूल्यांकन):

प्रत्येक व्यावसाय के लिए कार्य जगत को समझना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रकार की नौकरियों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यों की आवश्यकताएं होती हैं। उदाहरण के लिए इंजीनियरों को खदानों में फैक्टरियों में कार्य करना पड़ सकता है। उन्हें शिफ्ट ड्यूटी में या जोखिमभरी परिस्थितियों में कार्य करना हो सकता है। उन्हें अपने अधीनस्थ स्टाफ का प्रबंधन देखना पड़ सकता है, कर्मचारी संघ की समस्याओं से निपटना होता है आदि। इसी प्रकार पत्रकारों को समाचारों की खोज के लिए हमेशा तैयार रहना पड़ सकता है। उनमें महत्वपूर्ण तथा गैर–महत्वपूर्ण समाचारों में अंतर करने का कौशल होना चाहिए। उन्हें जोखिम उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए। आपको सभी कार्यों (नौकरियों) की कार्य परिस्थितियों व कार्य आवश्यकताओं के संबंध में सूचना एकत्र करनी होगी। नौकरियों के गहन अध्ययन के पश्चात् आपको कुछ व्यवसायों (नौकरियों) का चयन करना होगा जो आपके गुणों से मेल रखती हों।

व्यक्तिगत गुणों को चयनित व्यवसायों के गुणों से मिलान करें

यदि आप वकील बनना चाहते हैं तो यह देखें कि क्या आपके पास तर्कमूलक तथा विश्लेषणात्मक मस्तिष्क व अच्छी स्मरण शक्ति विद्यमान है। अच्छे संप्रेषण व प्रवर्तन कौशल तथा मानव प्रकति को समझने की क्षमता भी वकालत के व्यवसाय को आरंभ करने में सहायक होंगे। यदि आप एक वैज्ञानिक बनने का विकल्प चुनते हैं तो आप में वैज्ञानिक प्रकति, एक व्यापक मस्तिष्क, उत्सुकता, असीमित धैर्य तथा तथ्यों को खोजने की चाह होनी चाहिए।

रुचि, योग्यता, अभिरुचि तथा स्वास्थ्य कुछ ऐसे मानदंड हैं जिनके आधार पर व्यक्ति स्वयं का मिलान कार्य जगत से कर सकता है।

टिप्पणी

कैरियर नियोजन में सोपान

कैरियर नियोजन के प्रमुख सोपान निम्नानुसार हैं :

1. **स्वयं को समझना:** एक उचित कैरियर विकल्प के चयन के लिए व्यक्ति को अपनी रुचियों, अभिरुचि, कौशलों, स्वास्थ्य परिस्थितियों, व्यक्तित्व तथा प्राथमिकताओं को समझ लेना चाहिए।
2. **विभिन्न व्यवसायों के संबंध में सूचना एकत्र करनी चाहिए।**
3. **कुछ ऐसे व्यवसायों (3-4) को अल्पसूचीबद्ध कर लेना चाहिए जो व्यक्ति के गुणों के अनुरुप हों।**
4. **चुने गए प्रत्येक व्यवसाय का वहत विश्लेषण करें:** इस कार्य के लिए व्यक्ति को निम्नलिखित सूचना एकत्र करनी चाहिए।

   क. कार्य (नौकरी) की प्रकति।

   ख. कार्य का वातावरण।

   ग. शैक्षणिक योग्यता व शारीरिक आवश्यकताएं।

   घ. प्रवेश की पद्धति।

   ड. प्रगति या पदोन्नति की संभावनाएं

   च. आर्थिक लाभ

   छ. लाभ व हानियां

5. **अपनी विशेषताओं (गुणों) को चुने गए प्रत्येक व्यवसाय की विशेषताओं से मिलान करें।**
6. **सर्वाधिक उपयुक्त व्यवसाय का चयन करें।**
7. **व्यवसाय में प्रवेश के अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर कार्य (प्रयास) करें।**

(**नोट:** विद्यार्थियों के लिए प्रारंभिक कदम है – पढ़ाई के लिए विषयों का चयन करना।)

विभिन्न स्थानों पर मार्गदर्शन केन्द्र उपलब्ध हैं जहां व्यक्ति स्व–मूल्यांकन में सहायता प्राप्त कर सकता है, विभिन्न व्यवसायों के संबंध में सूचना प्राप्त कर सकता है तथा अपने जीवन के एक या अनेक पहलुओं के संबंध में निर्णय ले सकता है।

यदि आपको अपने कैरियर की योजना बनाने या निर्णय लेने में कोई कठिनाई है तो आप काउंसलर या कैरियर टीचर से भी परामर्श ले सकते हैं।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 27.2

1. कैरियर नियोजन के महत्वपूर्ण सोपान क्या हैं?

   ____

   ____

2. कैरियर नियोजन तथा कैरियर संबंधी निर्णय लेने में कौन सहयोग कर सकता है?

   ____

   ____

27.6 कैरियर विकास के लिए विशेष प्रावधान

"कभी नहीं से देर भली" एक सामान्य कहावत है जो कि शिक्षा के क्षेत्र में भी लागू होती है। कैरियर विकास के अवसर जीवन के सभी स्तरों पर उपलब्ध हैं। ऐसे कुछ अवसर हैं – निरंतर शिक्षण तथा सेवा के दौरान प्रशिक्षण।

निरंतर शिक्षा

निरंतर शिक्षा की अवधारणा हाल की उत्पत्ति है। शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, सूचना व कौशलों के संग्रह में वद्धि करने या नवीकरण करने की जीवन परियंत प्रक्रिया है। (निरंतर शिक्षा का महत्व सभी के लिए चाहे वह व्यावसायिक है, टेक्नोक्रेट है या तकनीशियन है)। शिक्षा अध्ययन या क्रियात्मक शिक्षा के परिदश्य में निरंतर शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षित होने के पश्चात् व्यक्ति निरंतर शिक्षा केंद्रों के माध्यम से अपनी शिक्षा जीवित रख सकता है। मुक्त विद्यालय तथा मुक्त विश्वविद्यालय निरंतर शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराते हैं।

नौकरी के दौरान प्रशिक्षण

यहां उस शिक्षा व प्रशिक्षण से आशय है जो एक व्यक्ति व्यवसाय में प्रवेश करने के पश्चात् प्राप्त करता है। ज्ञान के सभी क्षेत्रों में होने वाले त्वरित परिवर्तनों (विकासों) के कारण इसकी आवश्यकता होती है।

कैरियर समायोजन

- यदि अचानक आपका वजन घट जाये और आपके कपड़े फिट न आएं तो आप क्या करते हैं?

टिप्पणी

- अच्छा, आप कपड़े उसी के अनुसार संरचित करते हैं, संरचना का सीधा मतलब है उपयुक्तता के अनुसार परिवर्तन करना।

कई बार हमें ऐसा महसूस होता है कि जो कार्य हम कर रहे हैं वह हमारी रुचि का नहीं है। ऐसी स्थिति में कैरियर समायोजन आवश्यक हो जाता है। कैरियर समायोजन से तात्पर्य एक व्यक्ति द्वारा व्यावसायिक मूलक में परिवर्तन करने से है। ऐसा एक क्षेत्र से पूर्णतः दूसरे क्षेत्र में जाकर या संबंधित क्षेत्र में ही जाकर या समान क्षेत्र में उत्तरदायित्वों में परिवर्तन करके किया जा सकता है। कुछ परिस्थितियां, जहां कैरियर समायोजन अनिवार्य हो जाता है, निम्नानुसार है :

- सेवानिवत्ति के पश्चात् यदि व्यक्ति में क्षमता है तो उसे कोई सामान्य नौकरी कर लेनी चाहिए।
- जब कार्य का वातावरण उपयुक्त न हो।
- जब कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हो जाएं। उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति को एक निश्चित प्रकार का कार्य करने पर कोई बीमारी हो जाती है तथा उस कार्य को उसी परिस्थिति में करते रहने पर वह और बढ़ सकती है या व्यक्ति में कोई अशक्तता उत्पन्न हो जाए जिसके कारण उसका कार्य प्रभावित हो रहा हो।
- जब वर्तमान कैरियर में प्रगति की कोई संभावना न हो।

आपने क्या सीखा

- कैरियर विकास में 'कैरियर' से तात्पर्य उन सभी गतिविधियों से है जो एक व्यक्ति अपने जीवन काल में करता है।
- कैरियर विकास एक व्यक्ति की जीवन शैली में समग्र विकास है। यह एक उत्कष्ठ निरंतर एवं सतत् प्रक्रिया है।
- समन्वेषी (Exploratory), स्थापन (establishmet), अनुरक्षण (maintenance), तथा ह्रास (decline) कैरियर विकास के महत्वपूर्ण चरण हैं।
- स्व–मूल्यांकन, चयनित कैरियर का मूल्यांकन तथा व्यक्ति की योग्यताओं का नौकरी द्वारा अपेक्षित क्षमताओं से मिलान कैरियर नियोजन के कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं।
- कैरियर समायोजन व्यक्ति द्वारा व्यावसायिक भूमिका में परिवर्तन करना है। कई बार यह अपरिहार्य हो जाता है।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. कैरियर तथा कैरियर विकास क्या है?
2. जीवन के चरण क्या हैं?
3. व्यावसायिक विकास के चरण कौन–से हैं?
4. कैरियर विकास में स्वयं को समझना आवश्यक क्यों है?
5. कैरियर समायोजन क्या है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

क्रियाएं

1. अपने आप का अवलोकन करें तथा विकास के उन चरणों को लिखें जिनसे अभी आप गुजर रहे हैं। अपनी आधारभूत विशेषताओं को भी जोड़ें तथा लिखें कि कौन–सा व्यवसाय आपके लिए सबसे उपयुक्त है।
2. कोई पाँच व्यवसाय चुनिये तथा इन प्रत्येक व्यवसाय में प्रवेश के लिए अपेक्षित मूल विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

27.1

1. विकास एवं समन्वेषी चरण
2. उत्तरदायित्वों को कम करना।

27.2

1. स्वयं तथा एकत्रित सूचना को समझना, तथा उन्हें अल्पसूचिबद्ध करना, सूचना का विश्लेषण करना, व्यवसाय के साथ गुणों को मिलाना, उपयुक्त व्यवसाय का चयन करना तथा लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य करना।
2. काउंसलर, कैरियर टीचर